International Journal of Applied Research 2017; 3(6): 120-122

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(6): 120-122
www.allresearchjournal.com
Received: 13-05-2017
Accepted: 10-06-2017

पवन कुमार
गांव भोडिया खेड़ा जिला फतेहाबाद, हरियाणा, भारत

Correspondence
पवन कुमार
गांव भोडिया खेड़ा जिला फतेहाबाद, हरियाणा, भारत

अषोक लव कृत उपन्यास 'षिखरों से आगे' में मूल्य बोध

पवन कुमार

प्रस्तावना

विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, मानवीय नैतिक मूल्यों के कारण ही भारतीय संस्कृति विश्वविख्यात रही है। आलोच्य विषय के माध्यम से इन्हीं मूल्यों का विवेचन विश्लेषण किया जाएगा। **'शिखरों से आगे'** उपन्यास में उपन्यासकार अशोक लव ने आधुनिक भारतीय समाज में व्याप्त मूल्यों के साथ–साथ मूल्यों के पतन पर भी चिन्ता व्यक्त की है। मानव परिवार की लघु इकाई है। मानवों के समूह से ग्राम या नगर, ग्राम या न गरों के समूह से प्रदेश, प्रदेशों के समूह से राष्ट्र और राष्ट्रों के समूह से विश्व का अस्तित्व स्थापित होता है। जब इनके संबंधों में कटुता या तनाव आता है तो अव्यवस्था का जन्म होता है। व्यवस्थित समाज में व्याप्त महत्व को मूल्यों की संज्ञा दी जा सकती है और सामाजिक अव्यवस्था के निमित कारणों को मूल्यों का पतन माना जा सकता है। [1] चिन्तन मनन से विचार, विचारों से धारणा और धारणा से मूल्यों का निर्माण होता है, इस धारणा के कारण प्रत्येक समाज के मूल्य भिन्न–भिन्न हो जाते है।

शिखरों से आगे उपन्यास में बड़ी ही धैर्यता से मानवीय संबंधों के साथ–साथ समर्पण भाव–बोध पर नए अर्थो के वितान फैलाए है। यह आवश्यक नहीं रह जाता कि प्रत्येक व्यक्ति को सम्बन्धों के आधार पर नाम और रिश्तों में बांध कर ही देखा जाता रहे। विविध परिस्थितियों में जीते हुए भी व्यक्ति को लेखक ने बड़ी ईमानदारी से मानवीय भावुकता को अभिव्यक्त किया है।

शुभी की नम आंखों में तैरते भावों से विनोद का मन भीग गया। वह नहीं जानता था शुभी के मन में उसके प्रति इतना प्रेम भरा था। उसने उसकी झील सी शान्त आंखों में झांकते हुए कहा – ''कालेज के दिनों को स्मरण करो। तुमने अश्रु बहा–बहाकर मेरे हृदय में स्थान बनाया था। मेरे प्रेम का पागलपन तुम पर छाया हुआ था। मुझसे विवाह का प्रस्ताव तुमने किया था। मै पत्थर तो नहीं था। मैं अपनी पारिवारिक सीमाओं से परिचित था। इसीलिए तुम्हारी भांति झरने का तीव्रगति से आगे नहीं बढ़ा था। आगे तभी बढ़ा जब तुमने पूर्णतया आश्वस्त कर दिया। आगे तब बढ़ा जब तुमने संग–संग जीने मरने की बातें की। ...और तुमने मांजी से विवाह की बात करके मेरे समक्ष प्रसन्नताओं का स्वप्न लोक सजा दिया। [2]'

इसी प्रकार विनोद अपने साथी अध्यापक आशुतोष की पत्नी अल्का को समझाता है–

'विनोद समझाने लगा, ''आप जैसा सोचती है वैसा कुछ भी नहीं है। आजकल पुरूष–नारी लड़के – लड़कियां साथ–साथ काम करते है। उनमें मित्रता हो जाना स्वाभाविक है। हमारे साथ कितनी अध्यापिकाएं है। हम उनके साथ मजाक करते रहते है, घर गृहस्थी के सुख दुख बांटते है। स्कूल के कार्यक्रमों में एक साथ मिल जुलकर काम करते है। बाहर भी जाना पड़ता है तो जाते है। इसका यह अर्थ तो नहीं हो जाता कि हमारे एक दूसरे से प्रेम संबंध हो गए। आशुतोष बच्चा तो है नहीं जो कोई इसे बहला–फुसलाकर ले जाएगा। यह ऐसा व्यक्ति है ही नहीं। पति–पत्नी में एक–दूसरे पर विश्वास ही नहीं, अंधविश्वास होना चाहिए। जब तक आप एक–दूसरे पर विश्वा नहीं करेंगे तो गृहस्थी कैसे चलेगी?''[3]

उपन्यासकार ने मानवीय सम्बन्धों का तेजी से बदल रहे मूल्यों, नैतिकता, मूल्यों में गिरावट, तेजी से बदलते जा रहे समाज की विसंगतियों पर भी खुलकर कलम चलाई है। उपन्यास में एक जगह अलका, विनोद को आशुतोष के बारे में कहती है, विनोद अलका के पास गया। उसे बात न बढ़ाने का परामर्श दिया। वह उसे ही डांटने लगी थी – ''मेरा इतना अपमान करके वह क्या समझता है, मै चुपचाप बैठी रहूंगी ? उसकी टांगे तुड़वाकर हाथ में रखवा दूंगी और तुम भी सुन लो। मै तुम्हारी इज्जत करती थी। अब मेरे पास आने की कोई जरूरत नहीं है। उसे भी कह देना। इस घर में घुसने की हिम्मत न करे। मकान मेरे नाम है। जहां चाहे रहे। देखती हूं इस दो टके के मास्टर को कौन सी छोकरी अपने सीने से लगाएगी !''[4]

विनोद शिक्षामंत्री राकेश आहुजा को आज के मानवीय मूल्यों के बारे में कहता है– 'डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक, वैज्ञानिक, व्यवसायी तो घड़ाधड़ तैयार हो रहे है। पर इनमें समाज के प्रति समर्पण भाव कहा है? एक ओर राजनेता सारे नैतिक मूल्यों को रसातल में पहुंचा रहे है तो दूसरी ओर औद्योगिकरण ने लोगों को स्वार्थी बना दिया है। इन परिस्थितिया में ऐसी संस्थाओं की नितान्त आवश्यकता है जो समाज को समर्पित और संस्कारवान पीढ़ी तैयार करक दें। हमारी योजना ऐसे स्कूल खोलने की है जिनमें नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा दी जायेगी। एक और योजना है। इसमें भारतीय संस्कृति के सक्षम इलेक्ट्रानिक मीडिया के कारण उत्पन्न हुई समस्याओं का सामना करना है। इसके लिए भारतीय संस्कृति को गौरवान्वित करने वाली टेली फिल्मों, धारावाहिकों का निर्माण करने की योजना है।'' [5]

पारिवारिक संबंधों में मूल्यों का विघटन हो रहा है। प्यार, रिश्तों का सम्बन्ध सहयोग आदि की भावनाएं समाप्त हो रही है। 'शिखरों से आगे' उपन्यास में यही दिखाया गया है कि किस तरह परिवार में विघटन हो रहा है । स्त्री–चरित्र एकाकी परिवारों में वैवाहिक संबंधों के भावुक कारणें की ओर बड़ी गहराई और धैर्यता से अशोक लव ने ध्यान आकर्षित करवाया है । आशुतोष विनोद को अपनी पत्नी अलका से सम्बन्धों के तनाव के बारे में बताता है ।

''क्यों? क्या फिर झगड़ा हो गया है ?''

''झगड़ा ? यार ! यह औरत एक दिन मेरी जान ले लेगी। जरा–जरा सी बात का एकसा बतंगड़ बनाएगी कि क्या कहूं। तू भी क्या कहेगा सवेरे सवेरे पत्नी–पुराण छेड़ बैठा। साली शादी क्या कर ली, मुसीबत मोल ले ली है। डॉक्टर ने इसे अच्छा भला समझा रखा है, घर में तनाव मत पैदा किया करो। इस पर डॉक्टर की बातों का कोई भी प्रभाव नहीं हुआ। लगता है मेरे मरने पर ही इसे चैन आएगा।''[6]

इस प्रकार काफी परिवारों में भी तनाव तथा पति–पत्नी भी एक–दूसरे को संदेह की दृष्टि से देखते है तो परिवारों में टूटन अनिवार्य है । इस प्रकार अलका आशुतोष और विनोद है। चित्र प्रदर्शनी में जाते है तो रास्ते में अलका आशुतोष के बारे में कहती है, रास्ते भर झुझलाती रही थी – ''ये पेंटिंग जिन्दगी में क्या का आएगी? विनोद, इन्हें समझाते क्यों नहीं हो । छुट्टी के बाद में कोई काम धंधा ही कर लें । घर में चार पैसे तो आएंगे। स्कूल की नौकरी में कोई पत्थर तो तोड़ने नहीं पड़ते। पानी में रंग घोल–घोलकर कागज रंगवाते रहते है। घर आकर फिर रंग और ब्रुश उठा लेंगे या फिर लड़कियों के फोन सुनते रहेंगे। आजकल की दुनिया में पैसा है तो सब कुछ है। आजकल लोग स्वार्थी है। आर्टिस्ट इनके पास भागे आएंगे। ये भी फालतू आदमी है। उन्हें समझाने बैठ जाएंगे। इनसे पूछो, इन्हें क्या मिलेगा? कुछ काम धंधे में लगेंगे तो ध्यान उधर लगेगा। आजकल सब लोग कोई न कोई पार्ट टाइम काम करते रहते है। अपने यहां ही देख लो किसी ने प्रिंटिंग प्रैस लगा रखी है, किसी ने फैक्टरी लगा रखी है। आपके स्कूल की तो औरतें तक पर्स, साड़ियां, जूते, अचार–मुरब्बे बेचती रहती है। आप शादी कर लेंगे तो ऐसे ही बोर्डिंग–हाऊस थोड़े ही पड़े रहोगे। यह धर्मार्थ–सेवा तो शादी ब्याह से पहले ही होती है।''[7]

इसी प्रकार आशुतोष अलका के व्यवहार में कहता है कि घर से बाहर निकलते ही तथा घर में प्रवेश करते ही अलका का व्यवहार तनावयुक्त तथा असहनीय होता है। वातावरण तनाव युक्त होने पर टूटना अनिवार्य हो जाती है।

''महिलाओं के प्रति उसके आक्रोश की पृष्ठभूमि में उसकी पत्नी अलका का व्यवहार था। उसकी न तो कलाओं में रूचि थी, न ही आशुतोष की गतिविधियों से संतुष्टि। वह घर से निकलता तो प्रश्नों की झड़ी लगा देती, ''कहां जा रहे हो ? क्या काम है ? यूं ही आवारादर्गी कीक आदत पड़ गयी है।'' लड़कियों को लेकर व्यंग्य करती रहेगी। दो–तीन बार जबरदस्ती चित्रकला प्रदर्शनियों में ले गया था। [8]

स्वामी अखिलानन्द ने भी पहले सुधा अमोलकर से शादी की थी परन्तु अपनी पत्नी पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव और आधुनिकता की चकाचौंध के कारण परिवार में सामजस्यं न बन पाने के कारण परिवार टूट गया। स्वामी अखिलानंद जी सोचते है।

इसी प्रकार शुभी ने घरवाले विनोद को एक मामूली घर का लड़का बताकर प्रेम की कीमत न समझकर उसकी शादी विनोद से न करके प्रदीप नाम के लड़के से करते है तो, शुभी अपने परिवार से नाता तोड़ लेती है ''जीवन के व्यवहारिक पक्ष के कड़वे अनुभव थे। धन सम्पति को लेकर विवादों की लड़ाई लड़कर अपना अधिकार पाया था। मायके से संबंध न रखने की कसम विवाह के सात फेरों के समय ही खा ली थी । मेरी प्रसन्नता पर कफन ओढाने वालों को मै कभी क्षमा नहीं कर सकती। आज भी मेरा उनसे कोई सम्बन्ध नहीं है ।''[9]

अतः कहा जा सकता है कि अशोक लव के उपन्यास में बदलते पारिवारिक मूल्यों तथा आधुनिक सम्पता के प्रभाव पर चिन्ता प्रकट की गई है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज और परिवार की प्रमुख इकाई है। इसमें सांमजस्य बनाना बहुत जरूरी है। क्योंकि यदि मानव और समाज में कटुता होगी तो व्यवस्था बन जाएगी। शिखरों से आगे उपन्यास में आधुनिक समाज का जीवन चित्रण हुआ है। समाज में आधुनिकता तथा चारचाव्य संस्कृति का प्रभाव पड़ा है। नीरजा विनोद को समाज में स्त्री स्थिति के बारे में बताती है –

''हमारे समाज में लड़कियों का स्वतन्त्र अस्तित्व कहां है। उनके सिद्धान्तों का माजक उड़ाया जाता है। विवाह के पश्चात वे पति के हाथों की कठपुतली बन जाती है। मेरे पति ने मुझे शराब पीने पर विवश किया । मेरे पति ने मुझे मांस खाने पर विवश किया। इस आदमी ने विवाह के पश्चात् किस–किस के सक्ष ने मेरा मजाक नहीं उड़ाया। 'पिछड़ी हुई है। अठारहवीं शताब्दी की है। किसके साथ फंस गया हूं । इसे कहीं ले जा नहीं सकता ।' उफ ! ...विनोद, तुम नहीं जान सकते। पिता के घर से पति के घर तक की छोटी सी यात्रा लड़की का सारा जीवन परिवर्तित कर देती है। ... पति साथ बिठाकर जबर्दस्ती पिलाने लगे... फिर पति का साथ देने के लिए पीने लगी....और वह समय भी आ गया जब पति का अपमान करने के लिए पीने लगी।''[10] कहते–कहते नीरजा की आंखों में आंसू भर आये।''[11]

आधुनिक सभ्यता के कारण टी0वी0, चलचित्र, सिनेमा आदि सामाज को नग्न सभ्यता की ओर ले जा रहा है। स्वामी जी उपदेश में समाज के बारे में बताते है –

''आधुनिक समाज को आदिमकाल की नग्न सभ्यता की ओर ले जाने का एक और माध्यम घर–घर पहुंच गया है । वह है टेलीविजन । ऐसे नग्न दृश्यों ने हमारी सभ्यता को पुनः आदिम सभ्यताके समकक्ष खड़ा कर दिया है । हम पूछते है कि यह विकास की कैसी प्रक्रिया है ? ऐसी स्थितियों में मनुष्य का आत्मिक विकास करना आवश्यक हो गया है । यह आत्मिक विकास क्या है। आत्मिक विकास आत्मविकास से संबद्ध है । आत्म विकास का अर्थ है मनुष्य का दैहिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास। यह सम्पूर्ण विकास ही आत्मिक विकास है।''[12]

समाज में पनप रही तलाक की समस्या बढ़ती है जो –सुरसामुखनिव' की तरह बढ़ती ही जा रही है। विनोद और नीरजा आपस में इस समस्या के बारे में गंभीरता से बातचीत करते है।

''तलाक में बच्चों की समस्या तो हमेशा बनी रहेगी । इसके लिए पति पत्नी में से उसे सोचना चाहिए जो अपने व्यवहार के कारण परिवार को तोड़ने पर तुला है ।आशुतोष अपनी पत्नी और कर्नल

के दैहिक सम्बन्धों के विषय में जानता है । दूसरे पुरूषों के साथ दैहिक सम्बन्ध रखने वाली पत्नी के साथ मैं दो क्षण भी न रह सकूं ।संबन्धों का आधार विश्वास होता है। पंडित ने दो चार मंत्र पढ़ दिए। पति–पत्नी बन गए। इससे आपसे प्रेम नहीं हो जाता । प्रेम शनैः शनै पनपता है। उसका आधार विश्वास होता है, त्याग होता है । इतने वर्षों से अलका का व्यवहार देख रहा हूं । वह आशुतोष को सदा प्रताड़ित करती रहेगी । मैंने उसके मुख से आज तक आशुतोष के लिए प्रशंसा के दो शब्द नहीं सुने । उसने अपने पति का जीवन नारकीय बना दिया है क्यों ? क्योंकि कर्नल पद और आर्थिक दृष्टि से आशुतोष तलाक ले रहा है तो क्या बुरा कर रहा है ? '' विनोद ने तर्क रखते हुए कहा। [13]

समाज में सारी व्यवस्था अस्त–व्यस्त हो गई है। समाज में लोग पाश्चात्य् सभ्यता की और भाग रहे है । महिलाएं भी क्लबों में जाकर शराब और सिगरेट पीने लगी है। नीरजा विनोद को काफी सर्स कलब में ले जाती है। विनोद वहां का दृश्य देखता है।

''सिगरेट का धुआं उड़ाते पुरूष–महिलाएं, मेजों परशराब के जाम ताश फेंटते हाथ, सौन्दर्य–प्रसाधन केन्द्रों से निकलकर परफयूम्स में नहीं महिलाएं, नशीले ठहाके !

नीरजा को क्लब का वातावरण विचित्र लग रहा था। कल तक वह इसी वातावरण की अंग थी। नशे में चूर होकर यहीं ठहाके लगाती थी। उसे स्चयं से घृणा होने लगी। शुक्र है वह शराब तक सीमित रही। [14]

उसने इस कोने से उस कोने तक दृष्टि डाली। यहां सम्बन्धी वैधता–अवैधता का कोई अस्तित्व नहीं था । सजी–धजी विधवाएं जामों देह उतारती है। ताश के पत्तों में जिसम फेंटती है। रात्रि व्यतीत करने के लिए साथियों की तलाश की जाती है । इनके लिए आधुनिकता देह पर्याय है।[15]

निष्कर्ष

'शिखरों से आगे' उपन्यास में सामाजिक मूल्यों पर व्यापक चर्चा हुई है। नायक विनोद अपने आस–पास के लोगों को पूरी तरह जुड़ा हुआ है। वह व्यवहारिकता और अन्तरिक भावों में सन्तुलन रखता चलता है । सामाजिक मूल्यों में गिरावट तथा लोग मूल्यहीन होते जा रहे है ।

संधर्व सूची

1. आप्टे, वामन शिवराम, संस्कृत हिन्दी कोष पृ0 182
2. 'शिखरों से आगे' उपन्यास – पृ0 सं0 55
3. 'शिखरों से आगे' उपन्यास – पृ0 सं0 59
4. 'शिखरों से आगे' उपन्यास – पृ0 सं0 72
5. 'शिखरों से आगे' उपन्यास – पृ0 सं0 201
6. अशोक लव'शिखरों से आगे' पृ0 – 67
7. अशोक लव'शिखरों से आगे' पृ0 – 156
8. अशोक लव'शिखरों से आगे' पृ0 – 72
9. अशोक लव'शिखरों से आगे' पृ0 –250
10. 'शिखरों से आगे' पृ0 – 124
11. अशोक लव'शिखरों से आगे' पृ0 – 206
12. अशोक लव'शिखरों से आगे' पृ0 – 215
13. अशोक लव'शिखरों से आगे' पृ0 – 166
14. अशोक लव'शिखरों से आगे' पृ0 – 165
15. अशोक लव'शिखरों से आगे' पृ0 – 67